

कबीर अमृत वर्षा | By Sunil Sharma |

1. गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाँय ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय ।
2. सब धरती कागज करूँ, लेखनि सब बनराय ।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरुगुण लिखा न जाय ।
3. मेरे मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर ।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लागे है मोर ।
4. साईं इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाय ।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय ।
5. ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होय ।
6. बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय ।
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय ।
7. निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छ्वाय ।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुहाय ।
8. माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोय ।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोय ।
9. पानी मेरा बुदबुदा, अस मानस की जात ।
देखत ही छुप जाएगा, ज्यूँ तारा परभात ।
10. बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ।
11. मालिन आवत देख के, कलियाँ करें पुकार ।
फूले फूले चुन लिए, काल्ह हमारी बार ।
12. मनवा तो पंछी भया, उड़के चला आकाश ।
ऊपर ही से गिर पड़ा, या माया के पास ।
13. कबीरा गरब न कीजिए, कबहुं ना हसिए कोए ।
अजहूँ नाव समुद्र में, का जाने का होए ।
14. दर्शन को तो साधु है, स्मरण को गुरु नाम ।
तड़पे को अधिनता, डूबन को अभिमान ।
15. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप ।
16. मन के मते न चलीये, मन के मते अनेक ।
जो मन पर अवसा है, ऐ साधु कोई एक ।
17. यह तन कांचा कुम्भ है, लिया फिरै साथ ।

धबका लागा फूटी गयो, कछू न आया हाथ ।

18. कबीर माया पापिनी, हरि सूं करे हराम ।
मुख कड़ियाली कुमति की, कहण न देई राम ।

19. तेरा साईं तुझमें है, जो पापन में बास ।
कस्तूरी का हिरन जो फिर फिर ढूंढे घास ।

20. जाति न पूछो साधु पूछ लीजिए ज्ञान ।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।

21. कबिरा सो धन सांचिये जो आगे को होय ।
शिष चढ़ाये पाए, ले जात न दे कोई ।

22. करता था तो क्यों रहा, अब करि क्यों पछुताए ।
बोया पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाए ।

23. जेह प्रीत न प्रेम रस, उन रसना नहीं राम ।
ऐ नर इस संसार में, उपजी भये बेकाम ।

24. तीर्थ गए से एक पल, संत मिले फलिचार ।
संत गुरु मिले अधिक पल, कहे कबीर विचार ।

25. काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब ।

26. ज्यों तिल माहि तेल है, ज्यों चकमक में आग ।
तेरा साईं तुझ ही में है, जाग सके तो जाग ।

27. जहाँ दया वहाँ धर्म है, जहाँ लोभ वहाँ पाप ।
जहाँ क्रोध वहाँ काल है, जहाँ क्षमा वहाँ आप ।

28. जल में बसे कमोदनी, चंदा बसे आकाश ।
जो है जा को भावना, सो ताहि के पास ।

29. जेहि घट प्रेम न संचरै, सो घट जानि मसान ।
जैसे खाल लोहार की, सांस लेत बिनु प्रान ।

30. जग में बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय ।
यह आपा तो डाल दे, दया करे सब कोय ।

31. ते दिन गए अकारथ ही, संगत भई न संग ।
प्रेम बिना पशु जीव न, भक्ति बिना भगवंत ।

32. प्रेम न बाड़ी ऊपजे, प्रेम न हाट बिकाय ।
राजा परजा जेहि रुचे, शीश देहि ले जाई ।

33. जिन घर साधु न पूजिए, हरि की सेवा नांहि ।
ते घर मरघट सारखे, भूत बसै तिन मांहि ।

34. तन को जोगी सब करें, मन को विरला कोई ।
सहज सब सिद्धि पाए, जो मन जोगी होइ ।

35. माया मुई न मन मुआ, मरि मरि गया शरीर ।
आसा त्रिसना न मुई, यों कही गए कबीर ।
36. साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय ।
सार-सार को गहि रहे, थोथा देई उड़ाय ।
37. पाछे दिन पाछे गये, हरि सो किया न हेत ।
अब पछतावे होत क्या, चिड़िया चुग गई खेत ।
38. राम बुलावा भेजिया, दिया कबिरा रोए ।
जो सुख साधू संग में, सो बैकुंठ न होए ।
39. दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ।
40. पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ।
41. माला फेरत जुग भया, मिता न मन का फेर ।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर ।
42. हाये धोये क्या हुआ, जो मन मैल न जाए ।
मीन सदा जल में रहे, धोये बास न जाए ।
43. कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय ।
भक्ति करै कोई सुरमा, जाति बरन कुल खोय ।
44. काय मंजन क्या करे, कपड़े धोई न धोई ।
उज्जल हुआ ना छुटिये, सुखनी सोई न सोई ।
45. प्रेम पियाला जो पिए, शीश दक्षिणा देय ।
लोभी शीश न दे सके, नाम प्रेम का लेय ।
46. फल कारण सेवा करे, करे न मन से काम ।
कहे कबीर सेवक नहीं, चाहे चौगुना दाम ।
47. माया छाया एक सी, बिरला जाने कोय ।
भगता के पीछे लगे, सम्मुख भागे सोय ।
48. नहीं शीतल है चंद्रमा, हिम नहीं शीतल होय ।
कबीरा शीतल संत जन, नाम सनेही होय ।
49. मन बिना कछु और ही, तन साधु के संग ।
कहे कबीर कारिग जी, कैसे लागे रंग ।
50. शीलवंत सबसे बड़ा, सब रत्नों की खान ।
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन ।
51. कागद करे नाव दी, पानी करा गंग ।
कहे कबीर कैसे फिर, पञ्च कुसंगी संग ।
52. जाता है तो जान दे, तेरी दशा न जाइ ।
खेवटिया की नाव ज्यों, चढ़ मिलेंगे आई ।

53. कबीर सुत क्या करे, जागी न जपे मुरारी ।
एक दिन भी न सोवता, लंबे पाँव पसारी ।
54. माखी गुड़ में गड़ी रहे, पंख रहे लिपटाए ।
हाथ मेल और सर धुनें, लालच बुरी बलाय ।
55. ज्ञान रतन का जतन कर, माटी का संसार ।
हाय कबीरा फिर गया, फीका है संसार ।
56. कबीर मन पंछी भया, भए ते बाहर जाय ।
जो जैसी संगती करै, सो तैसा फल पाय ।
57. संत पुरुष की आरती, संतों की ही देह ।
रखा जो चाहे अलख को, उन्हीं में रखे देह ।
58. कुटिल वचन सबतें बुरा, जारी करै सब छार ।
साधु वचन जल रूप है, बरसै अमृत धार ।
59. सुमिरन मन में लाइए, जैसे नाद कुरंग ।
कहैं कबीर बिसरे नहीं, प्राण तजे तेहि संग ।
60. कबीर तेइ पीर है, जो जाने पर पीर ।
जो पर पीर न जानई, ते काफिर बेपीर ।
61. सुमिरन सूरत लगाई के, मुख कछु न बोल ।
बाहर का पट बंद कर, अन्दर का पट खोल ।
62. कुल केला कुल उबरे, कुल रखा कुल जाए ।
राम निकुल कुल भेट ले, सब कुल रह्या समाय ।
63. चलती चक्की देख के, दिया कबिरा रोए ।
दो पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोई ।
64. कबीर सुत क्या करे, गुरु गोविंद के जाए ।
तेरे सिर पर जाम खड़ा, खर्च काहे का खाए ।
65. क्षमा बदन को चाहिए, चोटन को उत्पात ।
महाविष्णु की घाटी गई, जो भ्रम मारी लात ।
66. फिकर सभी को खा गई, फिकर ही सबका पीर ।
फिकर को फाका करे जो, ताके नाम कबीर ।
67. उज्जल कपड़ा पहरे कर, ही पान सुपाड़ी खाए ।
एके हरि का नाम, बिन बांधे जमकुर नहीं ।
68. ऊँचे कुल का जन्मीया, करनी ऊँच न होय ।
सुमिरन कलश सुर भरा, साधु निंदा होय ।
69. आग कहे दाजे नहीं, पांव न दीजे माही ।
जो पे भेद न जानही राम, कहो तो काहि ।
70. संत नाम की लूट है, लूट सके तो लूट ।
अंत काल पछताएगा, जब प्राण जाएंगे छुट ।

71. भक्ति भजन हरि नाम है, पूजा दुःख अपार ।
मन स्वच्छ कर्म ना, कबीर सुमिरन सार ।

72. काम क्रोध मद लोभ की, जब लग घट में खौन ।
कबीर मूर्ख पंडित, दोनों एक समान ।

73. मान बढ़ाई न करे, बड़ा न बोले बोल ।
हीरा मुख से ना कहे, लाख हमारा मोल ।

74. लकड़ी जल कोयला भयी, कोयला जल भयी राख ।
मैं पापिन ऐसी जली, कोयला भयी न राख ।

75. आए हैं तो जाएंगे, राजा रंक फकीर ।
एक सिंहासन चढ़ चले, एक बांधे जंजीर ।

76. जब मैं था तब हरि नहीं, अब हरि हैं मैं नाही ।
सब अधियारा मिट गया, दीपक देखा माही ।

<https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%95%e0%a4%ac%e0%a5%80%e0%a4%b0-%e0%a4%85%e0%a4%ae%e0%a5%83%e0%a4%a4-%e0%a4%b5%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%b7%e0%a4%be-by-sunil-sharma/>